BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

"प्रशिक्षुओं का मूल्यांकन के प्रति धारणा" शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी0 एड0) के विषेष सन्दर्भ में"

राजेश पाण्डेय
शोधार्थी
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड

शोध सार :

मूल्यांकन एक ऐसा उपकरण है जो अधिगम की वैधता व विश्वसनीयता को स्थापित करता है। इससे शिक्षार्थियों की अधिगम क्षमता व विकास को जानने में सहायता प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया में खामियाँ उजागर होती है साथ ही साथ मजबुत पक्षों की जानकारी प्राप्त होती है। मूल्यांकन के आधार पर ही कोई छात्र, प्रशिक्षु , शिक्षक या कोई भी व्यक्ति यह सुनिश्चित करता है कि हमें किस पक्ष पर कितना अधिक ध्यान देना है और किस पक्ष को पूर्ववत जारी रखना है। जिससे शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली हो सके। इस क्रम में होने वाली छोटी सी भी त्रुटि शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की प्रक्रिया को विफल कर सकता है। इस लेख में मूल्यांकन के विभिन्न पक्षों पर चर्चा करते हुए, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षुओं की मूल्यांकन के प्रति धारणाएँ को जानने का प्रयास करेंगे।

कुंजी शब्द : मूल्यांकन, प्रशिक्षु शिक्षक, शिक्षक –प्रशिक्षण महाविद्यालय

परिचयः

मूल्यांकन, जीवन के विकास की जाने वाली एक समयबद्ध व क्रमवद्ध प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत कोई भी मानव, छात्र, शिक्षक अपने उद्देश्यों के अनुरूप प्रतिफल की प्राप्ति का लेखा-जोखा व चिन्तन/मानन, करता है। और आवश्यकता अनुरूप अपने क्रियाओं, व्यवहारों, अभ्यासों, विधियों में परिवर्तन ला कर उद्देश्य प्राप्ति का प्रयास करता है। जिसमें वह सफल भी हो जाता है। यहाँ हमारा मूल्यांकन की संकल्पना शिक्षण - अधिगम प्रक्रियों से सम्बन्धित है अतः चर्चा भी उसी के अनुरूप हीं होगी। मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षा की एक महत्वपूर्ण अंग है। आरम्भ में मूल्यांकन को केवल मापन स्तर तक ही सीमित रखा गया था। जो सीखने-सीखाने की प्रक्रिया से अलग रखी गई थी। शिक्षक पाठ्यपुस्तक व पाठ्यक्रम के आधार पर वर्ग में जाकर पढ़ाते थे और पाठ के अंत में दिये गये अभ्यास प्रश्नों के उत्तर को लिखा दिया करते थे,बच्चें भी उन प्रश्नों के उत्तर को रट कर परीक्षा में उत्तर लिख देते,शिक्षक भी उनकी उत्तर-पुस्तिका में लिखे प्रश्नों के उत्तर को जाँच कर उचित अंक प्रदान कर देते। इस प्रकार से उस बच्चें के अधिगम के मूल्यांकन की प्रक्रिया पुरी हो जाती थी। प्राप्त अंक पत्र के आधार पर उर्तीण, अनुर्तीण घोषित कर दी जाती थी। तथा उर्तीण छात्र अगले कक्षा में अपनी दाखिला करवा लेते जबकि अनुर्तीण छात्र उसी कक्षा में पढ़ने को विवष हो जाते थे। इस प्रकार की पुरानी मूल्यांकन के नाम पर की जाने वाली मापन पद्धति की कुछ बातों पर हम घ्यानाकृष्ट करवाना चाहेंगे-

मूल्यांकन प्रक्रिया और शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया के बीच सम्बन्ध का स्थापित नही हो पाना। जिससे शिक्षक कक्षा में क्या पढ़ा रहे है? वास्तव में बच्चें कक्षा में चल रही शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया को समझ पा रहे है या नही, शिक्षण पाठ्यपुस्तक आधारित थी। अन्य सहायक शिक्षण सामग्री या संसाधनों से बच्चें अनभिज्ञ रह जाते थे एवं शिक्षक भी इन संसाधनों का प्रयोग अपने शिक्षण में

@2025 Bihar Shodh Samaagam

नही करते थे। बच्चों के अधिगम का स्तर तथा क्षमताओं का मूल्यांकन केवल पाठ्यपुस्तक के अन्त में दिए गए प्रश्नों के आधार पर ही किया जाता था।

- छात्र केवल विषय आधारित परीक्षण में उपलब्ध अंको द्वारा उसकी प्रगति को इंगित किया जाता था, छात्र के समग्र विकास की चर्चा नही की जाती थी।
- छात्र अपने अधिगम स्तर व क्षमता के सम्वर्द्धन किस प्रकार कर सकते है? कोई प्रतिपुष्टि की व्यवस्था इस प्रक्रिया में दिखाई नहीं देती है।
- अंकप्रणाली से बच्चें में हीनभावना का विकास व कुण्ठित हो जाना।

समय बदलने के साथ- साथ उपरोक्त उल्लेखित समस्याओं पर विचार-विमर्ष होता रहा है। इसके परिणाम स्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में लगातार सुधार भी हो रहा है। शिक्षण प्रक्रिया छात्र केन्द्रित होती चली गई। अब शिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन स्पष्ट दृष्टिगोचर भी होने लगे। फलतः मूल्यांकन, शिक्षण -अधिगम, प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बन गया जिसे एक त्रिभुज के रूप में दिखाया जाने लगा। जिसका आशय यह था कि सीखाना, सीखना तथा मूल्यांकन तीनों ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग व एक-दुसरे से सम्बन्धित है।

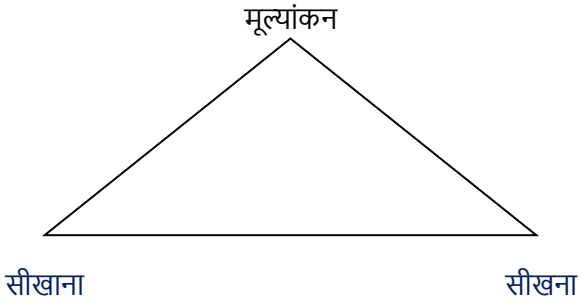

मूल्यांकन का सम्प्रत्ययः

वैदिक कालीन, बौद्धकालीन, मुगल कालीन शिक्षा -प्रणालियों में भी मूल्यांकन एक सत्त प्रक्रिया के रूप में श्रुति रूप में, बाद में लिखित रूप में मौजूद थी। शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन स्वतः ही समावेषित हो जाता है, जो हमसीखाते है सीखने वाले ने सीखा अथवा नहीं? इसकी जानकारी हमें मूल्यांकन प्रक्रिया से प्राप्त होती है। शैक्षिक प्रक्रिया में मूल्यांकन वह अंग है जिसके द्वारा हम शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया की सफलता का अनुमान लगाते है साथ ही साथ निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किस हद तक हुई? कहाँ कमी रह गई? किस पक्ष पर अधिक जोर लगाने का जरूरत है? किस को पूवर्वत ही रखा जाये? मूल्यांकन द्वारा पता चलता है। प्राचीन तथा मध्यकाल में अधिगमकर्ता के ज्ञान का मापन मौखिक उत्तर के आधार पर किया जाता था।

व्यक्तियों के बौद्धिक तथा मनोवैज्ञानिक व अन्य गुणों का वैज्ञानिकढंग से अध्ययन 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हीं प्रारम्भ हो गया विलियम वुन्ड, फांसिस गाल्टन, जे0 एम0 कैटल, गिलवर्ट, अल्फ्रेड बिने व अन्य मनोवैज्ञानिकोंने अपनी कठिन प्रयासों से विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की रचना करके विभिन्न अध्ययनों में प्रयुक्त किया। इन सबों द्वारा अपने परीक्षणों का उपयोग करके विभिन्न मानवीय गणों को मापना संभव कर दिखाया। इन परीक्षणों के आधार पर व्यक्तियों को अपने अन्दर निहित क्षमता का ज्ञान होता है। जिसमे सम्वर्द्धन कर अपने लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो जाते है। जिसका आधार मापन ही है जो मूल्यांकन का आधार है। मापन को अगर वैज्ञानिक शब्दावली के आधार पर देखा जाए तो / 'मापन अंकन' है।

एस0 एस0 स्टीवेन्स (1946) के अनुसारः *"मापन किन्ही स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है।",* अतः कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति, वस्तु, जीव में विद्यमान गुणों कोनियमानुसार अंक, अक्षर अथवा संकेत प्रदान करने की प्रक्रिया हीं मापन है। जो वस्तु व्यक्ति अथवा जींव में उपस्थित गुणों के प्रकार का अथवा उसकी मात्रा की अभिव्यक्ति करता है। जैसे किसी बच्चें ने 100 अंकों वाली गणित की परीक्षा में 75 अंक प्राप्त किये है।

मापन से प्राप्त अंकों, संकेतों को जब हम अर्थ प्रदान कर देते है तो वह आकलन प्रक्रिया कहलाती है। इस प्रक्रिया में हमे मापन द्वारा प्राप्त सूचनाओं को अर्थ प्रदान करना होता है। जैसे मापन के उदाहरण में बच्चें ने 75 प्रतिषत अंक गणित के पत्र में प्राप्त किया तो इसका अर्थ यह हुआ कि बच्चें ने अच्छी निष्पति गणित के आकलन में किया। पुनः जब हम मापन से प्राप्त अंकों को अर्थ प्रदान करते हुए स्वयं का मूल्य निर्णय भी प्रदान कर देते है तो वह मूल्यांकन की प्रक्रिया कहलाती है। जैसे जब हम देखते है कि वही बच्चा लगातार गणित के मापन में 75 प्रतिषत या उससे अधिक अंक ला रहा है तो हम अपना स्वयं का मूल्य निर्णय भी समाहित कर देते है कि बच्चे की गणित की निष्पति लगातार प्रगति की ओर दर्षाता है।

मूल्यांकन की परिभाषा

शिक्षा आयोग के अनुसारः मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।" वहीँ क्रान बेक ने बताया है कि मूल्यांकन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षक तथा छात्र इस बात का निर्णय करते है कि शिक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा रहा है या नहीं।" मूल्यांकन के सन्दर्भ में दी गई, उपर्युक्त परिभाषाओं से निम्न विषेषताएँ स्पष्ट होती हैः-

- मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जो हमेशा चलती रहती है।
- मूल्यांकन यह निर्णय लेने में सहयोग करता है कि शिक्षण के उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया गया है? आगे कहाँ कमी रह गया है? क्या सुधार की आवष्यकता है?
- विद्यार्थी के व्यवहार में हुए परिवर्तन का आकलन करना तथा उचित पृष्ट-पोषण प्रदान करना।

मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो बालक/व्यक्ति को उसकी क्षमता के विषय में बताती है, जब कोइ बालक अपनी की गई परिश्रम के अनुपात में परिणाम प्राप्त करता है तो उसे एहसास होता है कि उसका मूल्यांकन सही हुआ है। आज कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मापन हीं मूल्यांकन हो कर रह गया है। बच्चे ने परीक्षा में जितना अंक प्राप्त किया है उसी के आधार पर उसका मूल्यांकन कर दिया जाता है अनेक बार ऐसा होता है कि प्रयोगात्मक/ मौखिक परीक्षओं, साक्षात्कारों में अनेक प्रकार के आग्रहों के कारण, जाति-धर्म, भाई-भतिजावाद,वार्ड के आधार पर, प्रबंधन व प्रषासक के आग्रह पर अंक प्रदान किये जाते है। आपसी समन्वय के आधार पर भी अंक दिये जाते है। साथ ही लिखित परीक्षाओं के उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिए भेजने के साथ ही मौखिक रूप से परीक्षा प्रषासकों द्वारा फेल अथवा कम अंक नहीं देने की निर्देष प्रदान किये जाने, परीक्षक के पास समय का अभाव व विषय- विषेषज्ञ का अभाव,विद्यालय व विश्व विद्यालय प्रषासन पर अनावष्यक रूप से परीक्षाफल कम समय में घोषित करने का दबाव, उत्तर- पुस्तिकाओं की बढ़ती संख्या के कारणों से भी सही ढ़ंग से मूल्यांकन नहीं हो पा रहा। जिसके कारण से शिक्षा विदों ने केन्द्रीय मूल्यांकन कराने का सुझाव दिया। लगभग सभी बोर्ड व विश्व विद्यालय ने उसको अपना भी लिया। साथ ही साथ कोडिग-डिकोडिग की व्यवस्था भी कर दी गई। फिर भी व्यवस्था में सकारात्मक परिणाम नही दिखाई दी,

राधाकृष्णन आयोग व कोठारी कमिशन ने भी भारतीय शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन के लिए मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन की पेशकश की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 ने भी डिग्री के स्थान पर गुणवत्ता पर विषेष बल देते हुए मूल्यांकन के क्षेत्र में निम्न सिफारिष पेशकश की।

- रटने की प्रणाली को समाप्त किया जाए।
- परीक्षा व्यवस्था में सुधार किया जाए।
- सत्तत एवं व्यापक मूल्यांकन करना।
- अंक के स्थान पर ग्रेड-पद्धति को लागू करना।
- सेमेस्टर पद्धति को बढावा देना।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय जो अब शिक्षा मंत्रालय के नाम से जाना जाता है के द्वारा गठित समिति की रिपोर्ट (1991) के अनुसार- आजकल विद्यालयों में कोई भी व्यवस्थित शिक्षा र्थी मूल्यांकन प्रविधियाँ नहीं अपनायी जाती। अधिकांष राज्यों में अनावरोधन या स्वतः कक्षोन्नति की नीति का अनुसरण किया जाता है, जिसके अनुसार बच्चों को पाठ्यक्रम को दोहराने के लिए एक ही कक्षा में नहीं रोका जाता क्योकि इसको प्राथमिक शिक्षा को पूर्ण किये बिना बीच में ही विद्यालय छोड़ जाने का मुख्य कारण माना गया है तथा यह देखा गया है कि कई शिक्षक 'अनावरोधन' का अर्थ 'कोई परीक्षण' नहीं, के रूप में लगाते है और बच्चों का मूल्यांकन विल्कुल नहीं करते। जिसके परिणामस्वरूप जब तक बच्चें प्राथमिक स्तर की अंतिम कक्षा में नहीं पहुँच जाते, प्रायः किसी को भी उनके सीखने की स्थिति का पता नहीं होता।

इस क्रम में नेशनल कर्रिकुलम फ्रेमवर्क (2005) ने भी समय-समय मूल्यांकन पर अपनी आशय स्पष्ट करते हुए कहा कि मूल्यांकन का प्रयोजन यह नहीं है कि -

- बच्चें को डर के दबवा में अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
- उन बच्चों को नाम देना जैसे धीमी गति से सीखने वाले को स्लो लर्नर, होशियार , मन्दबुद्वि, समस्यात्मक विद्यार्थी। ऐसे अधिगम विभाजन, अधिगम की सारी जवाबदेही विद्यार्थी पर डाल देते है।
- मूल्यांकन की प्रक्रियाए जो केवल कुछ ही योग्यताओं का मापन व आकलन करती है, विल्कुल ही अपर्याप्त है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या, शिक्षा का अधिकार कानून या राष्ट्रीय शिक्षा -नीति बिल्कुल यह सिफारिस नहीं करती है कि आप बिना मूल्यांकन के बच्चें को अगली कक्षा में प्रमोट कर दें। यह सत्य ही होगा कहना कि हम सदियों से पुरानी अनुतीर्ण व निस्काष्ति करने की प्रथा से मानसिक रूप से ग्रसित है। हमारी यह धारणा रही है कि बच्चें को अनुतीर्ण करके उसी कक्षा में रखने से अगले वर्ष उसका शिक्षा का स्तर बढ़ेगा। बहुत सारे हुए अनुसधान के परिणाम यह बताते है कि फेल हुए बच्चें ा में नाकारात्मक सोच विकसित हो जाती है। कृष्णमूर्ति (1971) के अनुसार - यदी किसी विद्यार्थी को कक्षा में फेल कर दिया जाता है तो यह उसके लिए सजा है। मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चें ा में सीखने में सुधार के रूप में होना चाहिए। अतः अधिगम के लिए आकलन को बढ़ावा देने की आवष्यकता है। अधिगम का आकलन एक अन्तिम प्रक्रिया शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया में होनी चाहिए। एक गरीब पृष्ठभूमि वाले बालक को फेल कर देने पर सामाजिक उपहास के कारण ज्यादा संभावना यह होगी कि बच्चा विद्यालय आना बन्द कर देगा। यह एक मात्र तरीका होगा उन बच्चों को अनुतीर्ण या मन्दबुद्वि वाला बच्चा घोषित करने का जिसका प्रमुख कारण विद्यालयी व्यवस्था में कमी होना अधिक समझ आती है न कि उस बच्चे की कोई प्रकृतिक आन्तिक कमी। साथ ही बच्चों की तुलना से भी बचना चाहिए।

अतः शिक्षा के क्षेत्र में लगातार हुए गुणात्मक सुधार के प्रयास से मूल्यांकन का स्वरूप भी लगातार सुधरता चला गया। इस क्रम में मौखिक से लिखित, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्ध- वार्षिक व वार्षिक से गुजरते हुए स्थानन, नैदानिक, उपचारात्मक व योगात्मक रूप ग्रहण कर सत्त एवं व्यापक मूल्यांकन का रूप ग्रहण कर लिया। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी वार्षिक

परीक्षाओं के स्थान पर सेमेस्टर पद्धति, ग्रेडपद्धति, चयन आधारित क्रेडिट पद्धति, सत्त एवं व्यापक मूल्यांकनपद्धति व आॅनलाईन मूल्यांकन पद्धति को अपना ली गई है ताकि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक विकास हो सके।

शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षु ओं की मूल्यांकन के प्रति धारणा:

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी0 एड0)में गुणात्मक सुधार हेतु छब्ब्म् ने पुरे देष में दो वर्ष्षीय बी0 एड0 पाठ्यक्रम लागू रेगुलेशन 2014 के माध्यम से किया ताकि प्रशिक्षण सही हो सके। शिक्षक प्रशिक्षण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, इस प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षु शिक्षण क्रिया-कलाप में दक्षता प्राप्त करते है। शिक्षक अपने विद्यार्थी तथा समाज दोनो के लिए रोल माॅडल होता है, इसलिए उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास होना आवष्यक हो जाता है। साथ ही साथ सामाजिक समस्याओं के समाधान, उत्कृष्ट तर्क और विचार प्रस्तुत करने वाला हो जिससे भावी पिढ़ी का सार्वागीण विकास हो सके और एक प्रगतिषील समाज का सभ्य नागरीक बन कर राष्ट्र व विश्व के प्रगति में अपनी भूमिका प्रदान कर सके। समाज की दषा व दिशा तय कर सके जो एक शिक्षक की चिन्तनषील स्तर से प्रभावित होती है।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों द्वारा भी एक गुणवान शिक्षक प्रदान करने की मिषन ने मूल्यांकन के क्षेत्र में लगातार हो रहे परिवर्तन पर नजर रखी और प्रशिक्षु ओं का उसके अनुरूप तैयार भी करने लगा ताकि प्रशिक्षण का उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके। समाज को गुणवान शिक्षक प्रदान किया जा सके जो 21 वीं शताब्दी के बदले परिदृष्य में अपनी अस्तित्व को बनाये रखने में सफल हो सके। प्रशिक्षु का सार्वागीण विकास ज्ञानात्मक, भावात्मक, व क्रियात्मक का मूल्यांकन किया जा सके। साथ ही मूल्यांकन की अभिनव प्रवृतियाँ विषय -आधारित मूल्यांकन से हट कर योग्यता-आधारित मूल्यांकन का द्वष्टिकोण विकसित किया जा सके।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षु ओं के मूल्यांकन की योजना लगभग 60 प्रतिषत बाह्य तथा 40 प्रतिषत आन्तरिक होती है जिसका क्रियान्वयन सत्त एवं व्यापक रूप में किया जाता है। बाह्य परीक्षा, विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित की जाती है जो सेमेस्टर या वार्षिक रूप में होती है जबकि आन्तरिक मूल्यांकन कार्य, नियमित रूप से चलता रहता है जिसमें दत्कार्य, सेमिनार सिम्पोजियम, वर्कसाप, कानफ्रेन्स, उपस्थिति, प्रोजेक्ट कार्य, पाठ्य-सहगामी क्रियाकलापों में भागीदारी व प्रदर्षन, आन्तरिक मौखिक परीक्षा, कक्षा में प्रदर्षन, आन्तरिक परीक्षा में प्राप्त अंकों को समायोजित कर प्रदान किया जाता है। आन्तरिक अंक व वाह्य अंक को जोड़ कर किसी सेमेस्टर की उपलब्धि निर्धारित होती है। जिससे प्रशिक्षु ओं को सुधार का समुचित अवसर भी प्राप्त होता है ताकि वे अपने मूल्यांकन में सुधार कर सके। आज हम जिन प्रशिक्षु ओं को तैयार कर रहे है वे कल के शिक्षक है अतः उन्हें विद्यालयी शिक्षा में हुए व्यापक सुधार से अवगत होना अनिवार्य है। इस क्रम में मूल्यांकन के क्षेत्र में हुए लगातार सुधार की जानकारी भी प्रशिक्षु ओं कों होना अनिवार्य है। क्योकि जिस विद्यालय में वे योगदान देगेे, तो वहाँ के बच्चों का मूल्यांकन का भार भी उन्हीं पर होगी। आज के परिदृष्य मे बच्चों से अधिक अभिभावक मूल्यांकन के परिणाम से उत्सुक रहते है- वे ऐसा चाहते है कि बच्चे-

- उच्च ग्रेड व टेस्ट स्कोर अर्जित करें
- अपनी कक्षाएँ उतीर्ण करे, क्रेडिट अर्जित करें व पदोन्नति प्राप्त करें।
- विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित रहें।
- उच्च स्तरीय शैक्षिक क्रियाकलापों में भाग ले।
- बेहतर सामाजिक कौषल प्राप्त करें।

- विद्यालय में अच्छी तरह से अनुकूलन करे व व्यवहार करे।

उपरोक्त चाह के अनुरूप मूल्यांकन के स्वरूप में आपेछित परिवर्तन की गुंजाइष हमेशा रहती है। समय के साथ ही साथ अन्य चाह, मांग समाज, देष व विश्व में विकसित होगी जिसके अनुरूप शिक्षण व मूल्यांकन के स्वरूप में लगातार परिवर्तन होता चला जायेगा। बच्चा अगर लगातार विद्यालय आता है तो उसके सीखने के स्तर को लगातार परखा जाए और उसमें उसे दिक्कत आती है तो जरूरी नहीं कि समस्या बच्चें में है, यह कहीं और भी हो सकता है। सीखने में आई दिक्कत की खोज कर, सुधार हेतु कार्य करना चाहिए। शिक्षक अपने विधि, प्रविधियों, व्यूहों या सूत्रों में परिवर्तन कर सकते है। परीक्षण पद्धति में परिवर्तन किया जा सकता है। और ये सारी परिवर्तन तभी सम्भव हो सकता है जब बच्चे का पुरी तरह से सत्त एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए। "सत्त एवं व्यापक मूल्यांकन, सीखने का नहीं हो जो परिणाम आधारित है बल्कि सीखने के लिए हो जो प्रक्रिया आधारित है। यदि सत्त एवं व्यापक मूल्यांकन को सही रूप से संस्थान क्रियान्वित कर ले तो विद्यार्थी के सत्त सीखने की प्रक्रिया को हम परीक्षओं के भार से बचाकर बहुत बेहतर कर लगें।" एक अच्छी मूल्यांकन पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न -अंग होती है जिसका उद्देश्य सीखने-सीखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री का सुधार करना होता है जो विद्यालय के विभिन्न चरणों के लिए तय किए गए है। जो विद्यालयी क्षमता का प्रतीक होता है। यहाँ मूल्यांकन का अर्थ बच्चों की नियमित परीक्षा नहीं है, बल्कि दैनिक क्रियाकलापों और अभ्यासों के उपयोग से सीखने का मूल्यांकन करना है। सुनियोजित मूल्यांकन और नियमित प्रगति रिपोर्ट बच्चो को उनके अधिगम की प्रतिपुष्टि प्रदान करता है जिससे बच्चों में प्रतियोगिता को प्रोत्साहन नही होने देता है और बच्चों में विभाजन करके उन्हें ऐसी श्रेणियों में नहीं डाला जाता है। जिससे उनमें हीनभावना आ जाए। ऐसा करने से बच्चों में फेल होने का भय खत्म हो जाता है।

प्रगति पत्र तैयार करते समय शिक्षक को बच्चे के साल भर के कार्यों की झलक मिल जाती है क्या सीखा है? किस क्षेत्र में उसे अधिक मेहतन की आवष्यकता है? ऐसे प्रगित पत्र तैयार करने के लिए उसे बच्चों की दैनिक शिक्षण -अधिगम पर ध्यान देना व लिखना होगा। इसके लिए अवलोकन करना पडेगा। दैनिक सीखने आधारित आकलन से सत्त व व्यापक मूल्यांकन में सहयोग मिलेगी। किसी विषेष मूल्यांकन की आवष्यकता नहीं है। सीखने - सीखाने की प्रक्रिया में सीखने की संप्राप्ति, जो कि पहले से ही कक्षा और विषय स्तर पर तय कर दिए गये है, के द्वारा बच्चों के सीखने को कभी भी आँका जा सकता है। यहीं मूल्यांकन सबसे महत्वपूर्ण होगी जिसमें यह पता लगाना आवष्यक है कि बच्चा कुछ सीख भी रहा है या नहीं। योगात्मक आकलन के द्वारा तो सीखने के परिणाम हीं प्राप्त होते है। लेकिन सीखने का पता तो रचनात्मक आकलन से ही पता चलता है और जब तक पता चलता है तब तक कक्षा स्तर पर बहुत देर हो चुकी होती है। यहाँ पर यह जरूरी है कि शिक्षण के द्वारा बच्चों के रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन के बीच की खाई को भरा जाए। इसके लिए शिक्षक बच्चों के लगातार रचनात्मक मूल्यांकन करंे जिसमे निदानात्मक उपाय के साथ- साथ त्रुटियों के सुधार पर भी बल लगाया जाए।

सीखने के उद्देश्य से आकलन के मापदंड तय हो गए है। शिक्षक को यह समझना हीं होगा कि बच्चे के सीखने का स्तर क्या है? जवाबदेही तय हो चुकी है। शिक्षक , माता-पिता और समुदाय के लोेगों को अब जवाब देना होगा। इसके लिए शिक्षक को बच्चों के ज्ञान, सृजन के साथ-साथ समस्या-समाधान स्तर तक पहुँचने के लिए अर्थपूर्ण कार्य देना होगा। समूह-कार्य, सहपाठियों द्वारा सीखना, सहपाठी द्वारा आकलन करके-सीखने जैसी युक्तियाँ अपनानी होगी। शिक्षक को बच्चों की आयु, योग्यता, कक्षा के अनुरूप अपनी पाठ्योजना का विकास करना हीं पड़ेगा। जिन बच्चों को सीखने में अधिक सहायता चाहिए, उन्हें अधिक अन्तः क्रिया करनी हीं होगी। जिससे उनका अधिगम स्तर उँचा उठ सके। तीव्र ढ़ंग से सीखने वाले बच्चों की क्षमता व प्रेरणा बनाये रखने के लिए अतिरिक्त शिक्षण क्रिया-कलाप में शामिल करना ही होगा। तभी जा कर हम नई शिक्षा नीति 2020 के द्वारा

निर्देशित शिक्षण -अधिगम क्रिया का संचालन कर सकेंगें जहाँ पर 360 डीग्री मूल्यांकन की बात की जाती है। जो बच्चों के प्रगति पत्र में दिखेगा। जिसमें स्वयं आकलन, शिक्षक द्वारा आकलन, साथी-समूह द्वारा आकलन समाहित होगी। जो पुर्नतः लचीलापन लिए होगी जिसमें रचनात्मकता पर अधिक जोर, सुधार के अवसर व सम्पूर्ण विकास पर आधारित होगी। जिसका निर्धारण च्।त्।ज्ञभ् नामक स्वायत संस्था भारत सरकार के अधीन कार्य करेगी।

सुझाव :

- नई शिक्षा नीति 2020के अनुसंशा के अनुसार प्रत्येक संस्थान अपने मूल्यांकन प्रक्रिया में समय सीमा के अन्तर्गत सुधार कर लें।
- बच्चों के सम्पूर्ण विकास को घ्यान में रखते हुए ही मूल्यांकन प्रक्रिया को अपनाई जाए।
- बच्चों के प्रगति पत्र 360 डीग्री के मूल्यांकन के अनुरूप हो जिसमें स्वयं, साथी व शिक्षक की अनुपातिक भूमिका सन्नहित हो।
- बच्चों के ज्ञानात्मक, भावनात्मक व क्रियात्मक सभी पक्षों के विकास के लिए मूल्यांकन का स्वरूप व्यापक होना चाहिए।
- व्यापकता के भार से बचने के लिए, शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन का सत्त स्वरूप को अपना जाए।
- बच्चों में परिणाम सुधार हेत्वर्थ गुंजाईस हमेशा बनी रहे।
- अनावश्यक परीक्षा के भय से बच्चों को बचाया जाए।
- मूल्यांकन की विश्व सनीयता व वैधता को संधारित व सुनिश्चित किया जाए।

निष्कर्ष :

हम कह सकते हैं कि मूल्यांकन केवल अधिगम-परिणाम का मापदंड न होकर, अधिगम-प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए। इसका उद्देश्य न केवल यह जानना होना चाहिए कि शिक्षार्थी ने कितना सीखा है, बल्कि यह भी होना चाहिए कि वह कैसे सीख रहा है, किस दिशा में प्रगति कर रहा है, और उसमें किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इस प्रकार का मूल्यांकन शिक्षण को अधिक प्रभावशाली, सहभागी और उद्देश्यपरक बनाता है। वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि मूल्यांकन की प्रक्रिया को भयमुक्त, सहयोगात्मक और विकासोन्मुखी बनाया जाए, ताकि प्रशिक्षु अपने अनुभवों को साझा कर सकें और आत्मविश्वास के साथ सीखने की दिशा में आगे बढ़ सकें। इसी सन्दर्भ में व्यमद ठववा मांउपदंजपवद पद्धति (संभवत: नवाचार आधारित, व्यावहारिक एवं सतत मूल्यांकन प्रणाली) की अनुशंसा भी सामने आई है, जो मूल्यांकन को एक निरंतर, सहयोगी और जागरूक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती है। हालाँकि, मूल्यांकन की विश्वसनीयता (reliability) और वैधता (validity) को बनाए रखना भी अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए हमें मूल्य आधारित दृष्टिकोण अपनाना होगा, जहाँ मूल्यांकन केवल परिणाम नहीं बल्कि प्रक्रिया, प्रामाणिकता और नैतिकता का भी प्रतिनिधित्व करे। यह जिम्मेदारी हमारे शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों, प्रशिक्षकों और अभिभावकों की है कि वे एक ऐसा भयमुक्त, पारदर्शी और नैतिक वातावरण सुनिश्चित करें जिसमें मूल्यांकन न केवल ज्ञान का परीक्षण करे बल्कि व्यक्तित्व और व्यवहार के निर्माण में भी सहायक सिद्ध हो। अंततः, यदि हम मूल्यांकन को सुधार और आत्मविकास के उपकरण के रूप में अपनाएँ, तो यह न केवल बेहतर शिक्षक तैयार करेगा बल्कि एक समावेशी, संवेदनशील और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली का मार्ग भी प्रशस्त करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक, पी.डी. (1995): भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याये, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. कुलश्रेष्ठ, एम.पी (2005): शिक्षा मनोविज्ञान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ ।
3. कौल लोकेश (2005): शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली,, आर. लाल बुक डिपेा,मेरठ।
4. शर्मा एवं चतुर्वेदी, आर. ए. एवं षिखा (2007)): शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन तथा परामर्श , आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
5. शर्मा और भार्गव (2006): शिक्षा मनोविज्ञान, एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
6. अस्थान, बिपिन (2016/17): अधिगम कि लिए आंकलन, आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
7. सिंह, रामपाल व शर्मा, ओ. पी. (2007/2008):"शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी आगरा पब्लिकेशन, आगरा।